IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का मेक इन इंडिया योजना के प्रति जागरूकता का अध्ययन

निर्देशिका

श्रीमती तृप्ति

असिस्टेंट प्रोफेसर

प्रस्तुतकर्त्री

पारूल

एम.एड.छात्रा

सारांश –

मेक इन इंडिया का मकसद देश को मैन्युफैक्चरिंग का हब बनाना हैं। घरेलू और विदेशी दोनों निवेशकों को मूल रूप से एक अनुकूल माहौल उपलब्ध कराने का वायदा किया गया हैं ताकि 125 करोड़ की आबादी वाले मजबूत भारत को एक विनिर्माण केन्द्र के रूप में परिवर्तित करके रोजगार के अवसर पैदा हों। इससे एक गंभीर व्यापार में व्यापक प्रभाव पड़ेगा और इसमें किसी नवाचार के लिए आवश्यक दो निहित तत्वों नये मार्ग या अवसरों का दोहन ओर सही संतुलन रखने के लिए चुनौतियों का सामना करना शामिल है। राजनीतिक नेतृत्व के व्यापक रूप से लोकप्रिय होने की उम्मीद हैं लेकिन 'मेक इन इंडिया' पहल वास्तव में आर्थिक विवके, प्रशासनिक सुधार के न्यायसंगत मिश्रण के रूप में देखी जाती हैं। इस प्रकार यह पहल जनता जनादेश के आहवान – ''एक आकांक्षी भारत'' का समर्थन करती हैं।''

प्रस्तावना –

मेक इन इंडिया भारत सरकार द्वारा 25 सितम्बर 2014 को देशी और विदेशी कंपनियों द्वारा भारत में ही वस्तुओं के निर्माण पर बल देने के लिए बनाया गया है। अर्थव्यवस्था के विकास की रफ्तार बढ़ाने, औद्योगीकरण और उद्यमिता को बढ़ावा देने और रोजगार सृजन करने के लिए भारत का निर्यात उसके आयात से कम होता है। बस इसी ट्रेड को बदलने के लिए सरकार ने वस्तुओं और सेवाओं को देष में ही बनाने की मुहिम को शुरू करने के लिए मेक इन इंडिया यानी ''भातर में बनाओ'' योजना का प्रारम्भ की थी।

इसके माध्यम से सरकार भारत में अधिक पूँजी और तकनीकी निवेश पाना चाहती है। इस परियोजना के शुरू होने के बाद सरकार ने कई क्षेत्रों में लगी थ्क्प् ;थ्वतमपहद क्पतमबज प्दअमेजउमदजद्ध की सीमा को बढा दिया है, लेकिन सामरिक महत्व के क्षेत्रों जैसे अंतरिक्ष में 74 प्रतिशत, रक्षा – 49

प्रतिशत और न्यूज मीडिया 26 प्रतिशत को अभी भी पूरी तरह से विदेशी निवेश के लिए नहीं खोला है। वर्तमान में, चाय बागान में एफडीआई के लिए कोई प्रतिबन्ध नहीं है।

मेक इन इंडिया योजना में घरेलू और विदेशी, दोनों निवेशकों को एक अनुकूल माहौल उपलब्ध कराने का वादा किया गया हैं, पी एम मोदी की सोच यह थी कि भारत की 125 करोड़ से अधिक आबादी वाले भारत को एक मजबूत निर्माण केंद्र के रूप में परिवर्तित करके रोजगार के अवसर पैदा किये जा सकेंगे।

समस्या का औचित्य –

मोदी सरकार का मेक इन इंडिया मुख्यतः निर्माण क्षेत्र पर केंद्रित था, लेकिन इसका उद्देश्य देश में उद्ययशीलता को बढ़ावा देना भी है, मेक इन इंडिया का दृष्टिकोण निवेष के लिए अनुकूल माहौला बनाना, आधुनिक ओर कुशल बुनियादी संरचना, विदेशी निवेश के लिए नये क्षेत्रों को खोलना और सरकार एवं उद्योग के बीच एक बेहतर साझेदारी का निर्माण करना है।

मेक इन इंडिया पहल के बाद सरकार को देश एवं विदेशों को सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली थी। योजना के शुरू होने के समय से इसकी वेबसाईट पर इनवेस्ट इंडिया के निवेशक सुविधा प्रकोष्ठ को लाखों सवाल मिले है, जापान, चीन, फ्रांस और दक्षिण कोरिया जैसे देशों ने विभिन्न औद्योगिक और बुनियादी ढांचा परियोजनाओं में भारत में निवेश करने हेतु अपना समर्थन दिखाया गया है।

तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण –

(क) मेक इन इंडिया – मेक इन इंडिया भारत सरकार द्वारा 25 सितम्बर 2014 को देशों और विदेशी कंपनियों द्वारा भारत में ही वस्तुओं के निर्माण पर बल देने के लिए बनाया गया है।

(ख) एफ डी आई (फॉरेन डाइरेक्ट इन्वेस्टमेन्ट) – किसी एक देश की कम्पनी का दूसरे देश में किया गया निवेश प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (फॉरेन डाइरेक्ट इन्वेस्टमेन्ट) एफ डी आई कहलाता है।

शोध के उद्देश्य –

उच्च माध्यमिक स्तर के निजी व सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों का मेक इन इंडिया योजना के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

,शोध के परिकल्पना –

उच्च माध्यमिक स्तर के निजी व सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों का मेक इन इंडिया योजना के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध की विधि –

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्त्री द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या –

प्रस्तुत अध्ययन में जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के निजी व सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में चयन किया गया है।

शोध में प्रयुक्त न्यादर्श –

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु न्यादर्श के रूप में उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालय की 100 विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा।

शोध में प्रयुक्त उपकरण –

1. प्रस्तुत अध्ययन में स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग का प्रयोग आंकड़ों के संग्रहण हेतु किया गया।
2. शोधकर्त्री द्वारा मेक इन इंडिया योजना के प्रति जागरूकता का अध्ययन करने हेतु 30 कथनों की प्रश्नावली का निर्माण किया गया।
3. स्वनिर्मित प्रश्नावली का निर्माण तीन आयाम रोजगार संबंधी जागरूकता, शिक्षा संबंधी जागरूकता तथा सरकारी योजना संबंधी जागरूकता को सम्मिलित करते हुए किया गया।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ –

प्रस्तुत शोध कार्य में सांख्यिकी के रूप में निम्न का प्रयोग किया गया है –

1. मध्यमान
2. टी परीक्षण
3. टी मूल्य

शोध का परीसीमांकन –

1. शोधकार्य के लिए जयपुर शहर के उच्च माध्यमिक स्तर के दो विद्यालयों (एक निजी एवं एक सरकारी विद्यालयों) तक ही सीमित किया गया है।
2. शोध अध्ययन में केवल 12 वीं कक्षा के छात्र–छात्राओं को ही लिया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण –

उच्च माध्यमिक स्तर के निजी व सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों का मेक इन इंडिया योजना के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

चर	न्यादर्श	मध्यमान	प्रमाप विचलन	t	सार्थकता स्तर
उच्च माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का मेक इन इंडिया योजना के प्रति जागरूकता का अध्ययन	50	55	9.28	20.02	अस्वीकृत
उच्च माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का मेक इन इंडिया योजना के प्रति जागरूकता का अध्ययन	50	48	8.20		

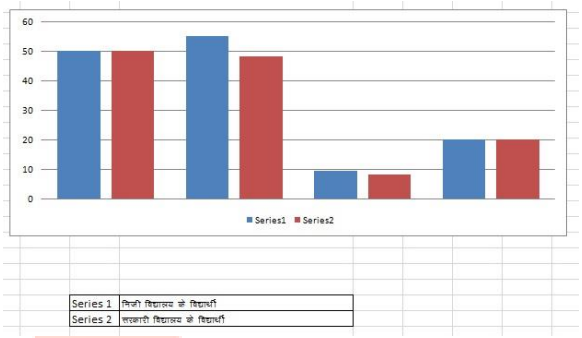

उपर्युक्त परिणामों के अनुसार टी अनुपात का मान गणना द्वारा 20.02 प्राप्त हुआ है। टी तालिका के अनुसार डी एफ 98 पर टी का आवष्यक मान है। यहाँ चूंकि टी के आवष्यक मान से टी का गणना द्वारा प्राप्त मान अधिक हैं, इसलिए अस्वीकृत सार्थकता स्तर पर परिकल्पना उच्च माध्यमिक स्तर पर निजी व सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की मेक इन इंडिया योजना के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर है।'' निरस्त करते हुए कह सकते है कि निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्यमान से अधिक है और दोनों मध्यमानों में सार्थक अंतर है।

शोध निष्कर्ष –

अतः स्पष्ट होता है कि निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की मेक इन इंडिया योजना के प्रति जागरूकता का सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा सार्थक रूप से अधिक है। निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की मेक इन इंडिया के प्रति जागरूकता सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियें में सार्थक रूप से अधिक होने के कारणों में सम्भवतः योग्य प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों द्वारा शिक्षण कार्य, विद्यार्थियों पर आर्थिक बोझ न होना तथा विद्यालय में शीर्षक वातावरण का होना महत्वपूर्ण कारक प्रतीत होता है।

सुझाव –

अध्ययन से प्राप्त परिणामों के आधार पर मेक इन इंडिया योजना के संदर्भ में निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किये गए है –

- यह परिणाम सरकारी विद्यालयों के संचालकों को अपने विद्यालय की गुणवता सुधारने हेतु संकेत प्रदान करता है।
- प्रस्तुत शोध से समाज का फायदा होगा। जब विद्यार्थी से मेक इन इंडिया योजना के प्रति जागरूकता की शिक्षा प्राप्त कर अपने परिवार व समाज को सफलता की ओर अग्रसर होगा।
- यह योजना भारत के विकास में अहम भूमिका निभाकर उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के जीवन की नई दिशा प्रदान करेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

- ीttps://www.thehindi.com
- https://business-standard.com
- https://drishtiias.com
- https://www.india.govt.india
- https://ni.m.wikipedia.org
- चार्टर वी. गुड (1993) अनुसंधान परिचय, चावला एण्ड संस, आगरा।
- अग्रवाल नीतू (2007), शैक्षिक सांख्यिकी, राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा।